सर्वेक्षण के अन्तर्गत उन्हीं सामाजिक घटनाओं अथवा समस्याओं का अध्ययन किया जाता है जो भौगोलिक रूप से सीमित हों। सामाजिक सर्वेक्षण की इसी विशेषता के कारण निदर्शन पद्धति (Sampling Method) का उपयोग किया जाता है। इसका उद्देश्य अध्ययन-क्षेत्र को नियन्त्रित करके वस्तुनिष्ठ निष्कर्ष प्रस्तुत करना है।

(4) **एक सहकारी प्रक्रिया** (A Co-operative Undertaking)—साधारणतया सामाजिक सर्वेक्षण का अध्ययन-क्षेत्र इतना विस्तृत होता है कि कोई व्यक्ति अकेले ही सम्पूर्ण अध्ययन कठिनता से ही कर सकता है। अक्सर एक सर्वेक्षण के लिए अध्ययनकर्ताओं के एक दल की आवश्यकता होती है। इस दृष्टिकोण से सामाजिक सर्वेक्षण को एक सहकारी प्रयत्न कहा जा सकता है। वर्तमान समय में विभिन्न प्रकार के सर्वेक्षणों के लिए अन्तर-विज्ञानीय उपागम (Inter-disciplinary Approach) का सहारा लिया जाने लगा है जिसमें एक से अधिक विज्ञानों के विशेषज्ञ अपने-अपने क्षेत्र से सम्बन्धित सूचनाएँ एकत्रित करके सामान्य निष्कर्ष प्रस्तुत करने का प्रयत्न करते हैं।

(5) **रचनात्मक आधार** (Constructive Basis)—सामाजिक सर्वेक्षण केवल तथ्यात्मक (factual) ही नहीं होता बल्कि उपयोग के दृष्टिकोण से यह रचनात्मक भी होता है। **हैरिसन** का विचार है कि सामाजिक सर्वेक्षण का कार्य-क्षेत्र केवल सामाजिक घटनाओं के संकलन और उनकी विवेचना तक ही सीमित नहीं है बल्कि इसका प्रमुख उद्देश्य समाज-सुधार और समाज-कल्याण के लिए कार्य करना है। वास्तविकता यह है कि सामाजिक सर्वेक्षण के द्वारा जब किसी समस्या से सम्बन्धित तथ्य एकत्रित किये जाते हैं तब उन्हीं के सन्दर्भ में विकास कार्यक्रमों को व्यावहारिक रूप दे सकना सम्भव हो पाता है। इस दृष्टिकोण से सामाजिक सर्वेक्षण का उद्देश्य सामाजिक समस्याओं का निराकरण करना तथा सामाजिक नियन्त्रण को दृढ़ बनाना होता है।

(6) **तुलनात्मक अध्ययन** (Comparative Study)—सामाजिक सर्वेक्षण यद्यपि आवश्यक रूप से दो विभिन्न समूहों अथवा घटनाओं के बीच तुलना करने से सम्बन्धित नहीं होता लेकिन वर्तमान समय में तुलनात्मक अध्ययन करना सामाजिक सर्वेक्षण की एक महत्वपूर्ण विशेषता बनती जा रही है। तुलनात्मक अध्ययन का उद्देश्य किसी विशेष मनोवृत्ति, विचार अथवा समस्या की प्रकृति को दूसरे तथ्यों की तुलना में ज्ञात करना होता है। यही कारण है कि कुछ व्यक्ति तुलनात्मक उपागम के द्वारा किए जाने वाले सामाजिक सर्वेक्षण को एकपक्षीय सर्वेक्षण की अपेक्षा अधिक उपयोगी मानते हैं।

(7) **परिमाणात्मक अध्ययन** (Quantitative Study)—वास्तविकता यह है कि सामाजिक सर्वेक्षण के अन्तर्गत अध्ययन के परिमाणात्मक पक्ष (quantitative aspect) पर अधिक बल दिया जाता है। यह सच है कि सर्वेक्षण के द्वारा गुणात्मक तथ्य एकत्रित किए जाते हैं परन्तु सर्वेक्षण का विशेष सम्बन्ध किसी घटना अथवा समस्या से सम्बन्धित परिमाणात्मक तथ्यों को एकत्रित करने से होता है। ये तथ्य प्राय: विभिन्न प्रकार के आँकड़े के रूप में एकत्रित किये जाते हैं तथा इन्हीं के आधार पर निष्कर्षों को सांख्यिकी के रूप में प्रस्तुत किया जाता है।

(8) **सामाजिक जागरूकता का माध्यम** (Media of Social Awakening)—सामाजिक सर्वेक्षण के अन्तर्गत तथ्यों का केवल संकलन ही नहीं किया जाता बल्कि उनके उचित प्रचार के द्वारा सामाजिक जागरूकता में भी वृद्धि की जाती है। इस सन्दर्भ में **हैरिसन** का कथन है कि सामाजिक सर्वेक्षणकर्ता का कार्य केवल क्षेत्र-कार्य (Field Work) के द्वारा तथ्यों का संकलन करना ही नहीं होता बल्कि सामाजिक घटनाओं की प्रकृति के द्वारा तथ्यों का संकलन करना भी होता है जिससे एक विशेष समस्या के प्रति लोगों में जागरूकता उत्पन्न हो सके तथा इस प्रकार जनसामान्य के सहयोग को प्राप्त किया जा सके।

सामाजिक सर्वेक्षण के प्रमुख प्रकार
(MAJOR TYPES OF SOCIAL SURVEY)

वर्तमान समाजों की सामाजिक संरचना तथा लोगों की मनोवृत्तियों में तेजी से परिवर्तन हो रहा है। स्वाभाविक है कि इस दशा में सामाजिक समस्याओं के स्वरूप, तत्कालीन आवश्यकताओं तथा उपलब्ध साधनों को ध्यान में रखते हुए अनेक प्रकार के सामाजिक सर्वेक्षण आयोजित किये जाने लगे हैं। यही कारण है कि सर्वेक्षण की विषय-वस्तु, पद्धति तथा उद्देश्य को आधार मानते हुए विभिन्न विद्वानों ने सामाजिक सर्वेक्षण के अनेक प्रकारों का उल्लेख किया है। इस सम्बन्ध में **ए. एफ. वेल्स** (A. F. Wells) के अनुसार सामाजिक सर्वेक्षण दो प्रकार के होते हैं—प्रचार सर्वेक्षण तथा

Scanned with CamScanner

तथ्य एकत्रित करने वाले सर्वेक्षण (Propaganda Survey and Fact Collecting Survey)।[1] सर्वेक्षण की अवधि को ध्यान में रखते हुए **सिन पाओ येंग** (Hsin Pao Yang) ने दो अन्य प्रकारों का उल्लेख किया है—ये हैं, सम-सामयिक सर्वेक्षण (Topical Survey) तथा सामान्य अथवा विस्तृत सर्वेक्षण (General or Comprehensive Survey)।[2] अनेक दूसरे विद्वानों ने सर्वेक्षण की विषय-वस्तु, अध्ययन प्रविधि, सूचनाओं को संकलित करने के ढंग तथा सर्वेक्षण के उद्देश्यों के आधार पर भी सामाजिक सर्वेक्षण के अनेक प्रकारों का उल्लेख किया है। इस सम्पूर्ण वर्गीकरण की सूची इतनी लम्बी है कि सभी का उल्लेख कर सकना अत्यधिक कठिन है। इस दृष्टिकोण से प्रस्तुत विवेचन में हम कुछ प्रमुख प्रकारों को ही आधार मानकर उनका संक्षेप में उल्लेख करेंगे जिससे सामाजिक सर्वेक्षण की प्रकृति को अधिक स्पष्ट रूप से समझा जा सके—

(1) **जनगणना तथा निदर्शन सर्वेक्षण** (Census and Sample Survey)—**जनगणना सर्वेक्षण** वह है जिसमें किसी विषय अथवा समस्या से सम्बन्धित सभी व्यक्तियों से प्रत्यक्ष सम्पर्क स्थापित करके सूचनाओं को एकत्रित किया जाता है। उदाहरण के लिए, यदि किसी महाविद्यालय में छात्र-असन्तोष के कारणों को ज्ञात करने के लिए सभी विद्यार्थियों से सम्पर्क स्थापित करके सूचनाएँ एकत्रित की जायें तो ऐसे सर्वेक्षण को 'जनगणना सर्वेक्षण' कहा जायेगा। यदि अध्ययन-क्षेत्र छोटा हो तो ऐसा सर्वेक्षण वैयक्तिक अध्ययनकर्ता द्वारा भी किया जा सकता है। इसके विपरीत, यदि अध्ययन का क्षेत्र बहुत बड़ा होता है तो जनगणना सर्वेक्षण के लिए अध्ययनकर्ताओं के एक दल की आवश्यकता होती है तथा ऐसा सर्वेक्षण बहुत खर्चीला भी होता है। इस स्थिति में जनगणना सर्वेक्षण किसी सरकारी संगठन द्वारा सम्पन्न करवाया जाता है। भारत में प्रति 10 वर्ष बाद होने वाली जनगणना इस प्रकार के सर्वेक्षण का सर्वोत्तम उदाहरण है। **निदर्शन सर्वेक्षण** (Sample Survey) वह है जिसमें सम्पूर्ण समग्र में से कुछ प्रतिनिधि इकाइयों का चयन कर लिया जाता है। इन चुनी हुई इकाइयों से जो सूचनाएँ प्राप्त होती हैं, उन्हें उस सम्पूर्ण समूह अथवा समुदाय की विशेषताएँ मानकर निष्कर्ष निकाल लिए जाते हैं। निदर्शन यदि वैज्ञानिक विधि से किया जाय तो ऐसा सर्वेक्षण भी जनगणना सर्वेक्षण के समान ही उपयोगी सिद्ध होता है।

(2) **पूर्वगामी तथा मुख्य सर्वेक्षण** (Pilot and Main Survey)—**पूर्वगामी सर्वेक्षण** वह सर्वेक्षण है जो किसी विषय अथवा समस्या की आरम्भिक जानकारी प्राप्त करने के लिए आयोजित किया जाता है। ऐसा सर्वेक्षण बहुत सरल और संक्षिप्त प्रकृति का होता है। इसके अन्तर्गत अध्ययनकर्ता अध्ययन विषय की सामान्य प्रकृति को जानने का प्रयत्न करता है, साथ ही वह कुछ सूचनादाताओं से स्वयं मिलकर यह देखने का प्रयत्न करता है कि किन-किन प्रविधियों तथा स्रोतों से सर्वोत्तम सूचनाएँ प्राप्त की जा सकती हैं। इस दृष्टिकोण से पूर्वगामी सर्वेक्षण एक अनौपचारिक सर्वेक्षण है जिसका उद्देश्य मुख्य सर्वेक्षण का आयोजन करने की कुशलता प्राप्त करना है। **एकॉफ** (Ackoff) ने लिखा है कि "पूर्वगामी सर्वेक्षण किसी अध्ययन को क्रियान्वित करने के लिए वैकल्पिक विधियों का ज्ञान प्राप्त करने की एक विधि है।"[3] पूर्वगामी सर्वेक्षण कर लेने के पश्चात् सर्वेक्षण की जो वास्तविक क्रिया आरम्भ की जाती है, उसी को हम **मुख्य सर्वेक्षण** (Main Survey) कहते हैं। यह सर्वेक्षण अत्यधिक व्यवस्थित और विस्तृत होता है जिसमें वैज्ञानिक स्तरों के द्वारा सूचनाओं का संकलन, वर्गीकरण तथा विश्लेषण करके सर्वेक्षण-रिपोर्ट प्रस्तुत की जाती है। इस दृष्टिकोण से मुख्य सर्वेक्षण आधार है, जबकि पूर्वगामी सर्वेक्षण इसका एक साधन है।

(3) **नियमित तथा कार्यवाहक सर्वेक्षण** (Regular and Ad-hoc Survey)—**नियमित सर्वेक्षण** का अर्थ एक ऐसे सर्वेक्षण से है जो किसी समस्या अथवा विषय से सम्बन्धित सूचनाएँ एकत्रित करने के लिए लगातार अथवा एक लम्बी अवधि तक चलता रहता है। ऐसे सर्वेक्षण का संचालन करने के लिए किसी स्थायी संस्था अथवा विभाग की आवश्यकता होती है। उदाहरण के लिए, भारत सरकार के जनगणना विभाग द्वारा किये जाने वाले जनसंख्या सम्बन्धी सर्वेक्षण, रिजर्व बैंक और स्टेट बैंक द्वारा संचालित साख-सुविधाओं तथा ऋणों के उपयोग सम्बन्धी सर्वेक्षण तथा समाज कल्याण विभाग द्वारा

1 A. F. Wells, *Social Survey : The Study of Society*, p. 434.
2 H. P. Yang, *Fact Finding with Rural People*, p. 4.
3 "Hence, the pilot study is designed to indicate what are the possible alternative operational procedures." —R. L. Ackoff, *The Design of Social Research*, p. 336.

Scanned with CamScanner

किये जाने वाला कल्याण कार्यक्रमों का मूल्यांकन, नियमित सर्वेक्षण की प्रकृति को स्पष्ट करते हैं। **कार्यवाहक सर्वेक्षण** वह है जो किसी तात्कालिक समस्या का अध्ययन करने के लिए किसी अस्थायी संगठन अथवा वैयक्तिक अध्ययनकर्ता द्वारा आयोजित किया जाता है। जैसे ही सर्वेक्षण कार्य पूरा हो जाता है, सम्बन्धित संगठन को भी भंग कर दिया जाता है। कार्यवाहक सर्वेक्षण साधारणतया एक ऐसी स्थिति में आयोजित किये जाते हैं जब किसी विषय से सम्बन्धित नीति का निर्धारण करना होता है, किसी विशेष स्थिति में जनता की राय को जानना आवश्यक होता है अथवा एक समूह की भावनाओं के अनुरूप किसी विकास कार्यक्रम को लागू करना होता है। अक्सर किसी नियमित सर्वेक्षण के करते समय बीच में अध्ययन से सम्बन्धित कोई ऐसी नयी समस्या अथवा विषय सामने आ जाता है जिसका पृथक् अध्ययन करने के लिए कार्यवाहक सर्वेक्षण का आयोजन किया जाता है।

(4) **परिमाणात्मक तथा गुणात्मक सर्वेक्षण** (Quantitative and Qualitative Survey)—**परिमाणात्मक सर्वेक्षण** वह है जो किसी विषय से सम्बन्धित आँकड़ों को सांख्यिकी के रूप में प्रस्तुत करने में रुचि लेता है। जब कभी भी किसी समूह में साक्षरता का प्रतिशत, जातिगत संरचना, विवाह-विच्छेद की दर, बेरोजगारी की सीमा, स्त्री-पुरुषों का अनुपात, प्रति व्यक्ति आय अथवा आय-व्यय के सन्तुलन जैसे विषयों का अध्ययन करने के लिए सर्वेक्षण आयोजित किये जाते हैं तो इन्हें परिमाणात्मक सर्वेक्षण कहा जाता है। ऐसे सर्वेक्षणों में सांख्यिकीय पद्धति का उपयोग करके निष्कर्षों को प्रतिशत अथवा अनुपात के रूप में प्रस्तुत किया जाता है। दूसरी ओर, सर्वेक्षण जब किसी गुणात्मक विषय अथवा घटना से सम्बन्धित होता है तो उसे **गुणात्मक सर्वेक्षण** कहा जाता है। ऐसे सर्वेक्षणों का उद्देश्य किसी विशेष समूह की मनोवृत्तियों, विचारों, सामाजिक मूल्यों के प्रभाव तथा सामाजिक परिवर्तन की सीमा आदि का अध्ययन करना होता है। इस दृष्टिकोण से जनमत, सामाजिक मनोवृत्तियों, समूहों के पूर्वाग्रह, आधुनिकीकरण की प्रकृति तथा परम्पराओं के प्रभाव में होने वाले परिवर्तनों आदि का अध्ययन करने के लिए जो सर्वेक्षण आयोजित किये जाते हैं, वे गुणात्मक सर्वेक्षण की श्रेणी में आते हैं।

(5) **आरम्भिक तथा आवृत्तिमूलक सर्वेक्षण** (Initial and Repetitive Survey)—यदि किसी क्षेत्र अथवा विषय से सम्बन्धित सर्वेक्षण प्रथम बार हो रहा है तो ऐसे सर्वेक्षण को **आरम्भिक सर्वेक्षण** कहा जाता है। ऐसे सर्वेक्षण से एक बार जो निष्कर्ष प्राप्त होते हैं, उन्हें अन्तिम निष्कर्ष मान लिया जाता है। इसी कारण कुछ विद्वान इसे अन्तिम सर्वेक्षण (Final Survey) भी कहते हैं। साधारणतया ऐसे सर्वेक्षण उन विषयों से सम्बन्धित होते हैं जिनमें एक लम्बे समय तक कोई विशेष परिवर्तन नहीं होता तथा जिनका अध्ययन-क्षेत्र तुलनात्मक रूप से सीमित होता है। दूसरी ओर, यदि अध्ययन से सम्बन्धित अथवा समग्र (Universe) की प्रकृति परिवर्तनशील होती है तो एक ही विषय पर एक से अधिक बार सर्वेक्षण करने की आवश्यकता होती है जिससे बदलती हुई दशाओं के सन्दर्भ में आवश्यक तथ्य एकत्रित किए जा सकें। ऐसे सर्वेक्षण को हम **आवृत्तिमूलक सर्वेक्षण** कहते हैं क्योंकि इसमें सर्वेक्षण की पुनरावृत्ति की जाती रहती है। वास्तविकता यह है कि आरम्भिक सर्वेक्षण अपेक्षाकृत रूप से अधिक कठिन होता है क्योंकि इसमें एक ओर अध्ययनकर्ता को अधिक परिश्रम करना पड़ता है और दूसरी ओर सम्बन्धित तथ्य भी कठिनता से प्राप्त हो पाते हैं।

(6) **सार्वजनिक तथा गुप्त सर्वेक्षण** (Public and Secret Survey)—**सार्वजनिक सर्वेक्षण** एक सामान्य सर्वेक्षण है जिसका प्रत्यक्ष सम्बन्ध जनसाधारण के जीवन और उसकी समस्याओं से होता है। इस दृष्टिकोण से सार्वजनिक सर्वेक्षण की सम्पूर्ण कार्यवाही किसी समूह अथवा जनता के सामने पूर्णतया स्पष्ट होती है। ऐसे सर्वेक्षण की रिपोर्ट भी जनता की सूचना के लिए प्रकाशित कर दी जाती है। राष्ट्रीय बचत, शिक्षा का प्रसार तथा जनसंख्या सम्बन्धी आँकड़ों से सम्बन्धित सर्वेक्षण इसी प्रकार के सर्वेक्षण हैं। इसके विपरीत, कुछ तथ्य इस प्रकृति के होते हैं कि उनसे सम्बन्धित निष्कर्षों को जनसामान्य के सामने स्पष्ट करना राष्ट्रीय हित में नहीं होता। इसके पश्चात् भी ये विषय वे होते हैं जिनका प्रशासकीय अथवा राजनीतिक कारणों से अध्ययन करना आवश्यक समझा जाता है। ऐसे विषयों से सम्बद्ध सभी सर्वेक्षण **गुप्त सर्वेक्षण** कहलाते हैं। उदाहरण के लिए, सरकार की कर-नीति पर जन-सामान्य की प्रतिक्रियाएँ, श्वेतवसन अपराधों की सीमा, जेलों में मरने वाले कैदियों

Scanned with CamScanner

की संख्या, सैन्य शक्ति का विस्तार, साम्प्रदायिक संघर्षों के कारण तथा अस्पृश्यता सम्बन्धी आचरणों की सीमा आदि इस प्रकार के विषय हैं जिनका अध्ययन साधारणतया गुप्त सर्वेक्षण के द्वारा ही किया जाता है। ऐसे सर्वेक्षण में निष्कर्षों को एक प्रवृत्ति के रूप में स्पष्ट किया जाता है तथा किसी भी उत्तरदाता के नाम अथवा परिचय का उल्लेख नहीं किया जाता।

(7) **प्राथमिक तथा द्वितीयक सर्वेक्षण** (Primary and Secondary Survey)—सूचनाओं के स्रोत को ध्यान में रखते हुए सामाजिक सर्वेक्षण को प्राथमिक और द्वितीयक जैसे दो प्रमुख भागों में विभाजित किया जा सकता है। **प्राथमिक सर्वेक्षण** एक प्रत्यक्ष सर्वेक्षण (Direct Survey) है जिसके अन्तर्गत सर्वेक्षणकर्ता स्वयं ही उत्तरदाताओं से सम्पर्क स्थापित करता है तथा आवश्यक सूचनाएँ एकत्रित करता है। इसके विपरीत, यदि अध्ययन-विषय इस तरह का हो जिस पर पहले भी अध्ययन किये जा चुके हों तथा उनके निष्कर्षों का सत्यापन करने की आवश्यकता महसूस की जा रही हो तो **द्वितीयक सर्वेक्षण** आयोजित किये जाते हैं। द्वितीयक सर्वेक्षण में उत्तरदाताओं से नये सिरे से सूचनाएँ एकत्रित करने की आवश्यकता नहीं होती बल्कि पहले एकत्रित किये गये तथ्यों के आधार पर ही निष्कर्ष निकालने का प्रयत्न किया जाता है। इस दृष्टिकोण से द्वितीयक सर्वेक्षण की प्रकृति एक बड़ी सीमा तक अनुभवसिद्ध न होकर सैद्धान्तिक ही होती है। यही कारण है कि प्राथमिक सर्वेक्षण पर आधारित निष्कर्ष द्वितीयक सर्वेक्षण की तुलना में अधिक विश्वसनीय समझे जाते हैं।[1]

इस प्रकार स्पष्ट होता है कि सामाजिक सर्वेक्षण के प्रकारों की कोई निश्चित सूची नहीं बनाई जा सकती क्योंकि अध्ययन-विषय की प्रकृति, अध्ययन के उद्देश्य तथा सूचनाएँ संकलित करने के ढंग के आधार पर सर्वेक्षण की प्रकृति एक-दूसरे से बहुत भिन्न हो सकती है। सर्वेक्षण के इन सभी प्रकारों में उपयोगिता के दृष्टिकोण से भी ऊँच-नीच का कोई विभाजन नहीं किया जा सकता क्योंकि सभी सर्वेक्षण अपने-अपने क्षेत्र में समान रूप से महत्वपूर्ण होते हैं।

Scanned with CamScanner